रिमझिम -3

S3L7P3

तीसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

शिक्षा (प्राथमिक) विभाग, असम सरकार

DIKSHA का उपयोग करके डिजिटल पाठ्य सामग्री कैसे देखें ?

अपने मोबाइल ब्राउजर पर **diksha.gov.in/app** टाइप करें और इन्स्टाल बटन पर टैप करें |

अथवा

Google Play Store पर **DIKSHA** सर्च करें और इन्स्टाल बटन पर टैप कर ऐप को डाउनलोड करें |

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग करके डिजिटल पाठ्य सामग्री कैसे देखें

1. पसंदीदा भाषा का चयन करें
2. अपनी उपयुक्त भूमिका चुने : शिक्षक, विद्यार्थी या अन्य
3. QR कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें
4. ऐप अनुमतियों को स्वीकारें
5. कैमरा को पाठ्यपुस्तक में दिए गए QR कोड के ऊपर केंद्रित करें
6. QR कोड से जुड़ी डिजिटल पाठ्य सामग्री देखने के लिए क्लिक करें

डेस्कटॉप पर QR कोड का उपयोग करके डिजिटल पाठ्य सामग्री कैसे देखें

QR कोड के नीचे आप अंकों का एक कोड देख पाएंगे

अपने डेस्कटॉप ब्राउज़र पर **diksha.gov.in/as/get** टाइप करें

QR कोड के नीचे दिए गए अंकों को सर्च बार में टाइप करें

उपलब्ध पाठ्य सामग्री की सूची देखें और अपनी पसंद के किसी भी पाठ्य सामग्री पर क्लिक करें

Copyright - SCERT, Assam not to be republished

रिमझिम-3

S3L7P3

तीसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

यह किताब ..... की है।

Copyright- SCERT, Assam not be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली द्वारा विकसित

तथा

राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम द्वारा अधिगृहीत

RIMJHIM-3 : A Hindi language textbook for **Class III** developed by NCERT, New Delhi and adopted by SCERT, Assam as per Government Office memorandum No. AEE. 79/05/Pt/97, dated Dispur the 27th October 2009 and published by the Assam Rastrabhasha Prashar Samiti, Guwahati.

Free Textbook

All right reserved : No reproduction in any form of this book, in whole or in part (except for brief quotation in critical articles or reviews), may be made without written authorization from the copyright publisher.

© : NCERT, New Delhi and SCERT, Assam.

प्रथम प्रकाशन : 2010
पुनर्मुद्रण : 2011
संशोधित संस्करण: 2012
पुनर्मुद्रण : 2013
पुनर्मुद्रण : 2014
पुनर्मुद्रण : 2015
पुनर्मुद्रण : 2016
पुनर्मुद्रण : 2017
पुनर्मुद्रण : 2018
पुनर्मुद्रण : 2019
पुनर्मुद्रण : 2020
पुनर्मुद्रण : 2021
पुनर्मुद्रण : 2022

असम सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण के लिए

प्रकाशक : असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

आवरण : जयंत भागवती

(टैक्स्ट पेपर 70 जीएसएम और कवर पेपर 165 जीएसएम पर मुद्रित)

मुद्रक :
अमरज्योति प्रिंटर्स
आर.जी.बी. रोड, गुवाहाटी-3

कृतज्ञता

राज्यिक शिक्षा-गवेषण एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम (एस.सी.ई.आर.टी.), विशेष रूप से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के प्रति कृतज्ञ है, जिन्होंने सम सरकार के निर्णयानुसार शैक्षिक वर्ष 2022 के लिए कक्षा 1 से 8 तक की हिंदी माध्यम विद्यालयों के लिए हिंदी (प्रथम भाषा) की पाठ्यपुस्तकें अधिग्रहण करने की अनुमति प्रदान की है। साथ ही एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों के अधिग्रहण हेतु सकारात्मक पहल के लिए असम सरकार को भी एस.सी.ई.आर.टी. कृतज्ञता ज्ञापन करती है। एस.सी.ई.आर.टी. उन महानुभावों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से एन.सी.ई.आर.टी. की हिंदी (प्रथम भाषा) की पाठ्यपुस्तकों के विकास तथा इस अधिगृहीत संस्करण के प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

निरदा देवी
(डॉ. निरदा देवी)
निदेशक
राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम,
काहिलीपाड़ा, गुवाहाटी -19

गुवाहाटी
दिसंबर, 2021

Copyright- SCERT, Assam not be republished

डॉ. रनोज पेगु, एम.बी.बी.एस.
मंत्री, असम

सत्यमेव जयते

शिक्षा, मैदानी जनजाति और
पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग

संदेश

विद्यालयीन शिक्षा का आवश्यक हिस्सा है – पाठ्यपुस्तक। विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक के माध्यम से ही ज्ञान अर्जित करते हैं। विद्यार्थी ही हमारे राज्य व देश के भविष्य के वास्तविक संसाधन हैं। मानव सभ्यता की धारा शिक्षा द्वारा ही गतिमान होती है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही वर्तमान में हमारी सरकार ने शिक्षा क्षेत्र को सर्वाधिक महत्व दिया है।

मौजूदा राज्य सरकार ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक सफलता दिलाने के साथ-साथ उनके जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति तथा राज्य के कल्याण के लिए अनेक महत्वाकांक्षी योजनाओं को लागू किया है। **प्रज्ञान भारती** के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत **क वर्ग** से **द्वादश वर्ग** तक के विद्यार्थियों को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक अविराम रूप से दी जा रही है। सन् 2020 से हमारी सरकार ने इस योजना को स्नातक वर्ग तक विस्तारित किया है। समूचे राज्य में उच्चतर माध्यमिक और स्नातक वर्गों में नामांकन शुल्क की माफी की घोषणा होने से एक सकारात्मक पहल की शुरुआत हुई है।

समाज में आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के शिक्षार्थियों को मैट्रिक एवं उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के शुल्कों को माफ करने की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही माध्यमिक स्तर पर भी विद्यार्थियों की पोशाकों (यूनीफॉर्म) की आपूर्ति के लिए सरकार ने आवश्यक व्यवस्था की है। **आनंदराम बरुवा योजना** के जरिए मैट्रिक पास मेधावी छात्र-छात्राओं को **लैपटॉप** या उसके बदले में आर्थिक अनुदान देने की व्यवस्था की गई है।

विद्यार्थियों के शिक्षण-मार्ग को सुगम बनाने के महान उद्देश्य से कार्यान्वित **प्रज्ञान भारती** योजना के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण जैसे पवित्र कार्यों के निष्पादन में योगदान दे रहे राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संसद तथा असम राज्यिक पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन निगम एवं असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को मैं धन्यवाद देता हूँ। ज्ञानार्जन की दिशा में हमारे विद्यार्थी निरंतर परिश्रम करते हुए राष्ट्र के संसाधन के रूप में अपने आप को निर्मित करने में सक्षम होंगे। इसी आशा के साथ मैं उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

रनोज पेगु

(डॉ. रनोज पेगु)
शिक्षा मंत्री, असम

Copyright- SCERT, Assam not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह की

© NCERT not to be republished

अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक

20 दिसंबर 2005
नई दिल्ली

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

Copyright- SCERT, Assam not be republished

बड़ों से दो बातें

बच्चों के हाथ में जैसे ही कोई नई किताब आती है, वे झट से उसे उलटना-पलटना शुरू कर देते हैं। उनमें एक स्वाभाविक उतावलापन होता है – चित्र निहारने का, कविता और कहानियों के बारे में जानने का या स्वयं उन्हें पढ़ डालने का। इस पाठ्यपुस्तक ने उनकी इस स्वाभाविक प्रवृत्ति का भरपूर फ़ायदा उठाने की कोशिश की है। किताब के लिए ऐसी कविताओं और कहानियों को चुना गया है, जिनमें बच्चों की बातचीत, उनकी आदतें, उनके नखरे, ज़िद, उनके सवाल साफ़-साफ़ झलकते हैं। इसलिए बच्चे ऐसी कविताओं या कहानियों से विचार और भावनाओं के स्तर पर एक जुड़ाव महसूस करेंगे।

कक्षा दो तक बच्चा काफ़ी हद तक **पढ़ना** सीख लेता है, पर कई स्तरों पर भाषा का विकास अभी भी हो रहा होता है। पढ़ने में मुश्किलें अभी भी आती ही हैं। मुश्किल आने पर बच्चा उससे कैसे जूझा; वह कौन-सा तरीका उपयोग में लाया; यह निश्चित करता है कि बच्चा पढ़ने में कितना कौशल प्राप्त कर पाया है। पढ़ने के बढ़ते अनुभव के साथ-साथ इन मुश्किलों का सामना करने का तरीका भी बदल जाता है। बच्चे पढ़ते समय लिखी गई बात की तुलना बार-बार उन बातों से करते हैं जो वे पहले से जानते हैं (पूर्व-ज्ञान)। पठन सामग्री को बच्चा तभी समझ पाता है, जब पूर्व ज्ञान से उस सामग्री का संबंध बनता है। बच्चों को जितना ज़्यादा पढ़ने को मिलेगा, पढ़ने में उनका आत्मविश्वास और रुझान उतना ही बढ़ेगा। इस बात को दृष्टिगत रखते हुए कुछ रचनाएँ केवल पढ़ने और उनमें इत्मीनान से डूबने के लिए ही दी गई हैं। ये रचनाएँ कहीं न कहीं किसी और रचना से जुड़ी हैं – कहीं विषय-वस्तु के स्तर पर तो कहीं विधा के स्तर पर। इस तरह कहीं पर बच्चे एक विषय की समझ को बढ़ाकर उसे

© NCERT not to be republished

और सुदृढ़ कर पाएँगे तो कहीं और नई जानकारी इकट्ठा कर पाएँगे। इन्हें पढ़ने में बच्चों को रस तो मिलेगा ही, उनमें पढ़ने के प्रति रुचि, आदत तथा ललक भी जगेगी।

पाठों के अंत में **अभ्यास प्रश्न** दिए गए हैं। इन अभ्यासों को विषय सामग्री के विविध पहलुओं की जटिलता के स्तर को ध्यान में रखते हुए दिया गया है। इनमें से कई प्रश्नों का उद्देश्य सूचना प्राप्त करना या बच्चों की जानकारी मापना नहीं बल्कि उन्हें बोलने और चर्चा करने का अवसर देना है। ऐसे अभ्यासों को धैर्यपूर्वक करवाएँ। किताब में दिए गए ऐसे प्रश्न केवल उदाहरण के रूप में है। आप ऐसे अन्य प्रश्न अपनी कल्पना से भी जोड़ सकती हैं। अभ्यास प्रश्नों के ज़रिए पाठ से जुड़ी भाषा की बारीकियों की ओर भी बच्चों का ध्यान खींचने का प्रयास किया गया है। अभ्यासों के अंतर्गत बच्चों को कई चीज़ें बनाने को दी गई है। इनसे स्वयं बनाने का आनंद तो बच्चों को मिलेगा ही, साथ ही निर्देश पढ़कर समझने की क्षमता का भी विकास होगा। किताब में अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं। आप अनेक तरीकों से उनका इस्तेमाल कर सकती हैं।

अभ्यास सिर्फ यह आँकने के लिए नहीं होते कि कहानी, कविता या पाठ बच्चों को कितना याद है। अभ्यास उन्हें पाठों से **भावनात्मक रूप से जुड़ने का मौका** भी देते हैं। जब तक बच्चे किसी पाठ से भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ेंगे, उसे अपने अनुभव से नहीं जोड़ सकेंगे तब तक उनकी पाठ की 'समझ' पूरी नहीं होगी। पूरी 'समझ' बनने पर ही बच्चे तथ्यपरक प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य प्रश्नों के उत्तर भी दे सकेंगे।

Copyright SCERT Assam not be republished

कल्पना करना या **अभिव्यक्ति** का अर्थ सिर्फ कहानी या कविता लिखना ही नहीं होता है। जब हम दूसरों के नज़रिए से घटना को देखते हैं, कहानी के अलग-अलग मोड़ों पर अनुमान लगाते हैं, कहानी खत्म होने के बाद भी कहानी सुनाते हैं, कहानी में घटित घटनाओं की तस्वीर अपने मन में बनाते हैं तो ये सभी हम कल्पना और अभिव्यक्ति की सहायता से करते हैं।

बच्चों को अभिव्यक्ति का भरपूर मौका मिले, इसके लिए उन्हें सिर्फ़ पाठों की घटनाओं तक सीमित न रखें। बच्चों को नई-नई जगहों से, **नए-नए स्रोतों से जानकारी** इकट्ठी करने दें, उसके बारे में लिखने और बात करने दें। ऐसा करने से बच्चे उन ज़रूरतों से जुड़ी भाषा का इस्तेमाल करना सीखेंगे। नई जानकारियाँ एकत्रित करना, उनका विश्लेषण और उन पर तर्क करना बच्चों को अन्य विषयों की परिधि में ले जाते हैं।

कल्पना के अलावा बच्चे भाषा का उपयोग **तर्क** करने, गौर से देखी गई चीज़ों पर बात करने और उनका **विश्लेषण** करने के लिए करते हैं।

Copyright-SCERT, Assam not be republished

बच्चों में ये कौशल जितने विकसित होंगे, वे उतने ही स्पष्ट, सटीक और तार्किक ढंग से भाषा का इस्तेमाल कर सकेंगे। उनकी अभिव्यक्ति उतनी ही प्रभावशाली होगी।

बच्चे भले ही भाषा के नियमों और व्याकरण की शब्दावली की बात न कर सकें पर इन नियमों को वे घर और अपने आसपास भाषा सुनते-सुनते सहज रूप से सीख जाते हैं। सहज रूप से भाषा के नियम सीखने की यह प्रक्रिया स्कूल में भी जारी रहनी चाहिए। इसलिए इस किताब में व्याकरण की बात अलग से न करके पाठों के संदर्भ में की गई है।

यहाँ बच्चे 'बहुवचन' शब्द नहीं जानते पर उनका सार्थक प्रयोग करना बखूबी जानते हैं। भाषा केवल व्याकरण तक सीमित नहीं होती, एक बात को कहने के कई तरीके हो सकते हैं और यही खूबी भाषा को अधिक समृद्ध बनाती है। इसके भी भरपूर अवसर बच्चों को किताब की परिधि में और उसके बाहर दिए जाने चाहिए।

कार्टून बच्चों को गुदगुदा कर किताब की ओर आकर्षित करते हैं। कार्टून देखने में बच्चों को आनंद तो आता ही है साथ ही अनजाने में वे भाषा भी सीखते हैं। दूसरी किताबों में बने कार्टूनों पर बच्चों से चर्चा करें। बच्चों से स्वयं भी कार्टून बनाने को कहें।

किताब में अनेक **चित्र** दिए गए हैं। भाषा सीखने में चित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चित्र बच्चों को आकर्षित तो करते ही हैं, सृजनशीलता और विश्लेषण को भी प्रोत्साहित करते हैं। किताब में दिए गए चित्र विविध शैलियों में हैं। चित्रों की शैली एवं बारीकियों की ओर बच्चों का ध्यान दिलवाएँ और चित्रों पर बच्चों से चर्चा करें।

Copyright SCERT Assam
not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय।

मुख्य सलाहकार

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्राध्यापिका,* लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली।

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक,* नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली।

उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका,* केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

कृष्ण कुमार, *निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

मंजुला माथुर, *प्रवाचक,* सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

मालविका राय, *शिक्षिका,* हैरीटेज़ स्कूल, डी–II, वसंत कुंज, नई दिल्ली।

सोनिका कौशिक, *प्रवक्ता,* जीसस एंड मेरी कॉलेज, नई दिल्ली।

सदस्य एवं समन्वयक

लता पाण्डे, *प्रवाचक,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

Copyright-SCERT Assam
not be republished

आभार

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम प्रोफ़ेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हर संभव सहयोग दिया।

परिषद उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली (क्योंजीमल और कैसे कैसलिया); निदेशक, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली (जब मुझे साँप ने काटा); निदेशक, नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नालॉजी कम्यूनिकेशन, नई दिल्ली (पत्तियों का चिड़ियाघर); प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली (सबसे अच्छा पेड़); प्रकाशक, नवनीत पब्लिकेशंस इंडिया लिमिटेड, दादर, मुंबई (शेखीबाज़ मक्खी); प्रकाशक, राजपाल एंड संस, दिल्ली (बंदर बाँट एवं बहादुर बित्तो); मुख्य संपादक, रत्नासागर प्रकाशन, दिल्ली (टिपटिपवा); प्रकाशक, सफ़दर हाश्मी मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली (सर्दी आई); प्रकाशक, एकलव्य, भोपाल (चाँद वाली अम्मा एवं नाना-नानी के नाम); पूनम सेवक, बरेली (हमसे सब कहते हैं) के हम आभारी हैं। नेशनल मिशन फॉर मैन्यूस्क्रिप्ट्स, नई दिल्ली द्वारा सहयोग प्रदान किए जाने के लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली एवं संग्रहालयाध्यक्ष, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रति भी हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने अपनी संस्था के पुस्तकालय के उपयोग की हमें सहर्ष अनुमति दी।

मुख्य अध्यापक, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कापसहेड़ा, समालखा एवं बिजवासिन ने हमें अपने विद्यालयों में बच्चों तथा शिक्षकों से किताब के संबंध में बातें करने का अवसर दिया, इसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम आरती गौनियाल, *सहायक शिक्षिका*, सर्वोदय विद्यालय, कैलाश एन्कलेव, सरस्वती विहार, नई दिल्ली; योगिता शर्मा, *सहायक शिक्षिका,* नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, मधु विहार, नई दिल्ली; रीता भगत, *शिक्षिका,* केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 4, आर.के. पुरम, नई दिल्ली; श्रीप्रसाद, *बाल साहित्यकार,* ब्रजभूमि, एन. 9/87, डी 77, जानकीनगर, ब्रजडीहा, वाराणसी के प्रति आभारी हैं।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए ज्योति गोयल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; अरविंद शर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; रेखा सिन्हा, *प्रूफ़ रीडर*; राधा, *कॉपी एडीटर*; सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*; शाकम्बर दत्त, *इंचार्ज,* कंप्यूटर कक्ष, ओमप्रकाश ध्यानी, अशोक एवं मनोहर लाल, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., आर.सी.दास, *फोटोग्राफर*, सी.आई.ई.टी. के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

© NCERT not to be republished

किताब में आए चिह्न

तुम्हें किताब में जगह-जगह ये चिह्न दिखाई देंगे। इनका मतलब यहाँ दिया गया है।

लिखो

बातचीत के लिए

तुम्हारी कल्पना से

बनाओ

करो

खेल

खोजो

शिक्षकों के लिए

मिलाओ

सिर्फ पढ़ने के लिए

ढूँढ़ो और लिखो

Copyright- SCERT, Assam. not be republished

कहाँ क्या है

आमुख IV

बड़ों से दो बातें VI

1. कक्कू 1

2. शेखीबाज़ मक्खी 7

3. चाँद वाली अम्मा 18

* *सूरज और चाँद ऊपर क्यों गए* *28*

4. मन करता है 29

5. बहादुर बित्तो 34

* *मूस की मज़दूरी* *44*

6. हमसे सब कहते 47

7. टिपटिपवा 54

8. बंदर-बाँट 62

* तारांकित रचनाएँ केवल पढ़ने के लिए दी गई हैं।

Copyright- SCERT, Assam
be republished

* अक्ल बड़ी या भैंस 75

9. कब आऊँ 78

10. क्योंजीमल और कैसे कैसलिया 85

* *सर्दी आई* *92*

11. मीरा बहन और बाघ 94

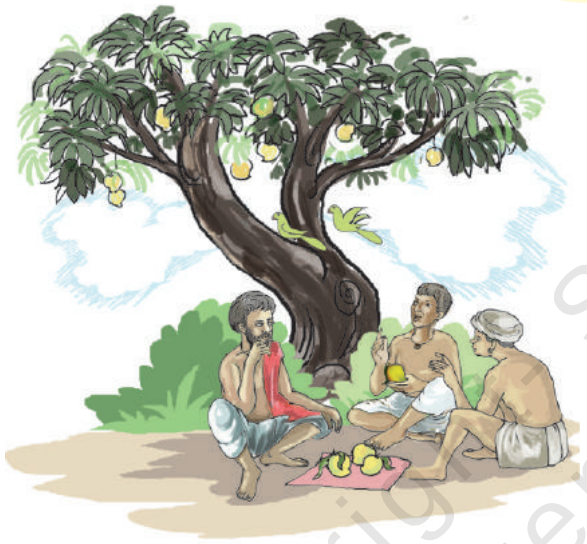

* *कहानी की कहानी* *100*

12. जब मुझे साँप ने काटा 103

* *बच्चों के पत्र* *112*

13. मिर्च का मज़ा 114

14. सबसे अच्छा पेड़ 122

* पत्तियों का चिड़ियाघर 133

* *नाना–नानी के नाम* *134*

© Copyright SCERT, Assam not to be republished